UGC CARE LISTED
ISSN No.2394-5990

संशोधक

• वर्ष : ९२ • मार्च २०२४ • पुरवणी विशेषांक ५२

प्रकाशक : इतिहासाचार्य वि.का.राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे

UGC CARE LISTED
ISSN No. 2394-5990

इतिहासाचार्य वि. का. राजवाडे मंडळ, धुळे
या संस्थेचे त्रैमासिक

।। संशोधक।।

पुरवणी अंक ५२ – मार्च २०२४ (त्रैमासिक)

- शके १९४५
- वर्ष : ९२
- पुरवणी अंक : ५२

संपादक मंडळ

- प्राचार्य डॉ. सर्जेराव भामरे
- प्राचार्य डॉ. अनिल माणिक बैसाणे
- प्रा. डॉ. मृदुला वर्मा
- प्रा. श्रीपाद नांदेडकर

अतिथी संपादक

- डॉ. सुजितसिंह परिहार
- प्रा. सूर्यकांत चोरघडे

* प्रकाशक *

श्री. संजय मुंदडा

कार्याध्यक्ष, इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे ४२४००१
दूरध्वनी (०२५६२) २३३८४८, ९४२२२८९४७१, ९४०४५७७०२०
Email ID : rajwademandaldhule1@gmail.com
rajwademandaldhule2@gmail.com

कार्यालयीन वेळ

सकाळी ९.३० ते १.००, सायंकाळी ४.३० ते ८.०० (रविवारी सुट्टी)

सदस्यता वर्गणी : रु. २५००/-

विशेष सूचना : संशोधक त्रैमासिकाची वर्गणी चेक/ड्राफ्टने
'संशोधक त्रैमासिक राजवाडे मंडळ, धुळे' या नावाने पाठवावी.

अक्षरजुळणी : सौ. सीमा शिंत्रे, पुणे.

टीप : या नियतकालिकेतील लेखकांच्या विचारांशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.

INDEX

1. भारत में किन्नरों के सामाजिक और कानूनी अधिकार: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
   - डॉ. जी. वसंती ---------- 7

2. रेत समाधि के संदर्भ में किन्नर विमर्श
   - प्रा. डॉ. द्वारका सुदाम गिते ---------- 11

3. किन्नरों के प्रति मानवीय संवेदना 'दरमियाना' कहानी के विशेष संदर्भ में
   - डॉ. सुनील गुलबसींग जाधव ---------- 14

4. सिनेमा और थर्ड जेंडर : विशेष संदर्भ (हिन्दी और दक्षिण भारतीय भाषाओं में बनी फ़िल्में)
   - अनूप कुमार गुप्ता ---------- 18

5. किन्नर विमर्श : सैद्धांतिक विवेचन
   - प्रो.डॉ. संजय जाधव ---------- 21

6. हिंदी साहित्य में चित्रित किन्नर समुदाय का संघर्ष
   - प्रा. देविदास गणेशराव येळणे ---------- 26

7. डॉ. रमेश कुरे की 'आगे ना पीछे' कहानी में किन्नर विमर्श
   - डॉ.पजई शंकर रामभाऊ ---------- 30

8. 'किन्नर जन्म की उपेक्षितता का सशक्त दस्तावेज: संझा'
   - डॉ. अविनाश कासांडे ---------- 33

9. 'आगे ना पीछे : किन्नर जीवन की त्रासदी'
   - डॉ. पांडुरंग ज्ञानोबा चिलगर ---------- 37

ISSN No. 2394-5990

संशोधक

'ऐ जिंदगी तुझे सलाम' किन्नर जीवन का यथार्थ चित्रण

डॉ. नामदेव ज्ञानदेव शितोळे
हिंदी विभाग प्रमुख
सावित्रीबाई कला महाविद्यालय
पिंपळगाव पिसा तहसील- श्रीगोंदा
जिला-अहमदनगर महाराष्ट्र
ई-मेल - ndshitole76@gmail.com
दूरभाष - 9403338513

शोध सार :

किन्नर केंद्रित ड्डऐ जिंदगी तुझे सलामफ इस उपन्यास किन्नरों के संघर्ष, पीड़ा, अकेलापन, विस्थापन, त्रासदी आदी के विषय पर लिखकर हरभिन सिंह मेहरोत्रा ने मुख्यधारा को जागरूक करने का यथार्थ प्रयास किया है. किन्नरों भी प्रेम, स्नेह,माया, ममता, करुणा आदी सामान्य मनुष्य की भावनाओं और संवेदनाओं के समान भावनाऐं होते है. उपन्यास की प्रमुख पात्र रोशनी को अभिभावकों का संरक्षण प्राप्त होता है उसे समाज से लड़ने और अपने अस्तित्व को स्थापित करने में आर्थिक और भावनात्मक स्तर पर संघर्ष करना पड़ता है. संघर्ष के जितने प्रकार हो सकते हैं उन सबका सामना रोशनी को करना पड़ता है जैसे सबसे पहले दैहक संघर्ष, मानसिक संघर्ष, सामाजिक संघर्ष, आर्थिक संघर्ष आदि. तृतीय लिंगीयों के प्रति जो धारणा बनी हुई है उसे बदलने की नितांत आवश्यकता है . यह भी एक मनुष्य है ऐसा संपूर्ण मानवजातीने स्वीकार करना चाहीए. ये हाड़-मांस के बने हुए हैं. इनको भी इंसान समझा जाना और सामान्य लोगो की तरह व्यवहार उनके साथ करने से ही उनका उत्थान संभव है. इनको मुख्यधारा में जगह यही लेखक का मुल उद्देश है. सरकार की तरफ से इसका सटीक प्रयास और कठोर नियम बनाने की आश्यकता है.रोशनी इस समाज का प्रातिनिधीक पात्र है.आज हमारे समाज में ऐसी अनेक रोशनी है जो उचित अवसर मिलने पर अपने आप को साबित कर सकती है.

प्रस्तावना :

'ऐ जिंदगी तुझे सलाम' यह हरभजन सिंह मेहरोत्रा का उपन्यास सन 2020 में प्रकाशित हुआ है। 200 पृष्ठों का यह उपन्यास तीन भागों में विभाजीत है. यह उपन्यास एक ऐसे किन्नर बच्चे की कहानी है जिसकी मां मानसिक रूप से असंतुलीत अर्थात पागल है. उसके पागलपन की वजह से वह आए दिन शराबियों और आदममयों की हवस का शिकार होती रहती है. इन लोगो हवस के परिणाम के रूप में वह पागल औरत एक किन्नर बच्चे को जंन्म देती है.इस बच्ची को देखनेवाला कोइ नहीं था. इसी कारण बच्ची को रूपा नाम की एक स्त्री जो नगरपालिका की सरकार मुलाजिम है और उसका पति कलवा जो रिक्शा चलाता है, दोनों गोद लेते हैं. रूपा को कोई बच्चा नहीं है और इस नवजात बच्ची की अवस्था वह देख नहीं पा रह है. बच्ची हिजड़ा है इसलिए उसका पति विरोध करता है. अपने पति के साथ-साथ आस-पास के लोग भी रूपा का विरोध करते हैं. उसे सलाह देते हैं कि इस बच्चे को हिजड़ों के समूह को दे दो. रूपा इस बात से सहमत नहीं होती और समाज के इस व्यवहार प्रश्न उठती हुई कहती है- है-''पगलिया की तरह उसे भी सब पागल समझने लगे हैं. कोई यह नहीं सोचता इसमें बच्ची का क्या दोष।.कौन-सी ऐसी अछूत बीमार लग गई है जिससे मुहल्ले-समाज से दूर किया जा रहा है।[1] समाज में किन्नर को एक अछूत बीमारी की तरह समझ लिया है जब देखो उन्हें समाज से बाहर निकालने पर लोग उतारू रहते हैं. एक निजात बच्ची के प्रति समाज की ये असंवेदनशील प्रवृत्ती रूपा को अंदर तक झकझोर देती है.इसी कारण रूपा सबके विरोध से परेशान होकर बच्ची को अपने साथ लेकर पति और मुहल्ले को छोडकर दूर चल जाती है. लेकिन वह उस अनाथ बच्ची को त्यागने की हिम्मत कर नहीं पाती. बाद में उसके पति को भी एहसास होता है और वह उसे ढूंढ कर अपने घर ले आता है.

रूपा कानूनी रूप से बच्चे को गोद लेकर उसका पालन-पोषण करती है। रूपा का यह कथन हृदय विदारक हैं-''अरे

बच्चीयां हिजड़ा भडल ता का हुआ ...हेय तो इंसान...दो हाथ, दो पैर...ओही की तरह बोलत हैये..वाइसन रोवत हेय...जानवर नहीं हेय''[2] रूपा की ह तरह अन्य समाज के लोगों की सोच भी ऐसी हो जाए तो इन किन्नरों को अपने घर से विस्थापित होकर नारकीय जीवन व्यतीत न करना पड़ेगा. रूपा बच्ची का नाम मधु इस ख्याल से रखती है कि उसके जीवन में मधुरता आये. उसके स्वागत में सुंदरकाण्ड का पाठ करती है, सब बस्ती वालों को भोज भी करती है। यह वही समाज के लोग है जो रूपा के हिजड़े बच्चे को गोद लेने के निर्णय का विरोध करते हुए उसे पागल, अडड़यल न जाने क्या-क्या कह रहे थे. आज यह लोग उसके निर्णय की प्रशंसा करते रहे थे.

रूपा ने धूमधाम से मधु का स्वागत तो कर लिया अपने आँगन में. लेकीन उसकी राह आसान नहीं थी. जैसे यह बात हिजड़ों को पता चली मधु उन्ही की बिरादरी की है, वे सभी पूरे कुनबे के साथ उसे लेने आ गए. हिजड़ों की ये जबदस्ती किसी भी रूप से सहनीय नहीं है. उनकी ये सोच की उन जैसे बच्चे केवल उन्ही के ढेरों में पल-बढ सकते है बिलकुल गलत है.वो लोग ऐसे बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रहे होते हैं. जिन बच्चों को अच्छी परवरीश मिल सकती है उससे उन्हें मरहूम कर रहे होते हैं. जिस दलदल और गंदगी में वो खुद जीवन बसर कर रहे हैं उसी दलदल में उस अबोध बालक को भी खींच ले जाते हैं. रूपा के साथ जबरदस्ती करते हैं और कानून का हवाला देते हुए उन्हें जब यह कहा जाता है कि यह गैर-कानूनी है तो उल्टा धमकी देते हुए कहते हैं- ''हाय...हाय...बड़ा कानून झाड रहा है...पुलिस क्या कर लेगी हमारा. ऐसे बच्चों के लिए सारे कानून फेल हैं...जानु भईया।''[3] सुरेश के समर्थन से रूपा और मोहल्ले वालों को भी जोश आ गया और सबने एकजुट होकर हिजड़ों के समूह का विरोध किया. सभी लोगो का विरोध होते देख हिजड़े अपनी मंशा से पीछे हट गए. उस वक्त वे मधु को न ले जा सके. लेकीन दुबारा आने की धमकी देकर गए.

लेकीन तकदीर को यह कतई मंजूर न था कि मधु एक हिजडा होते हुए भी अच्छा जीवन यापन करे. अनाथ को माता-वपता का प्यार मिले। दशहरे के मेले में रूपा और कलुआ बच्चे को घुमाने ले जाते हैं और वही से बच्चा चोरी करने वाला गिरोह मधु को चुराकर मुंबई बेच देता है. इस घटना ने रूपा और कलुआ के जीवन में एक अंधेरा छा गया. रूपा बच्ची के सदमे में पागल सी हो गई थी. कलुआ उसे समझा-समझा कर थक गया था. लेकीन मां की ममता का क्या करे? रूपा की हालत देख सुभद्रा कहती है- ''इत्ता मोह बना मलया है बच्ची से जो अपने को खत्म करने पर उतर आई है''[4]

उपन्यास के भाग-दो में मधु का पररचय किन्नरों के डेरे में रोशनी के नाम से दिया गया है. बच्चे की परवरीश की जिम्मेदारी निर्मला गुरु ने रज्जो किन्नर को दी है. रज्जो अपने डेरे के नियम कानून से अलग रखकर एक साधारण बालिका की तरह रोशनी को अच्छी परवरीश और अच्छी शिक्षा-दीक्षा देती है.इसी कारण रोशनी दसवी कक्षा में महाराष्ट्र में प्रथम आती है.रोशनी की इस उपलब्धी से सभी किन्नरो में उसका नाम हो जाता है.लेकीन जब वह आगे पढाई के लिए जाती है तो दाखिले के समय क्लर्क के यह शब्द किन्नरो के प्रति हीन भावना दर्शाते है- ''अब हिजड़े पढेंगे हमारे स्कूल में.''[5] क्लर्क के मुह से कहे गए इन शब्दों से अंदाजा लगाया जा सकता है कि रोशनी की योग्यता उसके मलंग के सामने इस समाज के आगे कुछ नहीं है.

स्कूल में रैगिंग के दौरान रोशनी को काफी अपमान सहना पड़ता है लेकीन उसके अध्यापक उसे समझाते हैं और उसके ज्ञान और तेज दिमाग की सराहना भी करते हैं. स्कूल के एक अध्यापक के यह शब्द उद्धृत करने योग्य हैं जो सामाजिक व्यवस्था पर प्रश्न उठाते हैं- ''सारा दोष इस सभ्य समाज का ही है. इन लोगों ने भी अपने आपको काट कर समाज की मुख्यधारा से अलग कर दिया है। आज रोशनी उसी दायरे को तोड़कर बाहर आई है. ऐसे कई लोग हैं जो आगे आना चाहते हैं पर उन्हें समुचित अवसर नहीं मिलता.....आप अच्छे घरानो से आए प्रतिभाशाली बच्चे हैं. स्कूल में आने वाले बच्चे मेरिटीस्ट हैं।...स्टेट में रोशनी ने हंड्रेड परसेंट लाकर रिकॉर्ड बनाया है।''[6] रोशनी पढाई में होशियार लडकी नहीं थी बल्की एक समझदार लडकी थी वह अच्छी तरह से जानती थी कि किन्नरो को इस परिस्थिती से बाहर कैसे निकाला जाए -''नहीं चाची यह लड़ाई जंग से नहीं जीती जा सकती. इसके लिए जरूर है अपनी सोच को बदलें।. अपने इरादों को मजबूत बनाएं कुछ अच्छा करने के लिए...।''[7] रोशनी के विचारों से ज्ञात होता है कि उसको किस मुकाम पर अपने को स्थापित करना है.

रोशनी अपने संघषों को झेलते हुए आगे चल रही थी उसके इस सफर में उसकी एक बेस्ट फ्रेंड नविता सदा उसके साथ रहती थी. लेकीन रोशनी को आईएएस का पद इतनी आसानी से मिलने वाला नहीं था. उसकी संरक्षक निर्मला

ISSN No. 2394-5990

गुरु और माँ रज्जों की रेलगाड़ी अपघात में मृत्यु हो जाती है. इसके बाद सुल्ताना डेरे की गुरु बनती है, जिसे रोशनी का पढाई करना पसंद नहीं था. वह रोशनी को अपने पारंपारीक धंधे में लगाना चाहती थी. अपनी संरक्षक की अचानक हुई मृत्यु से रोशनी अकेली हो जाती है. उसका साथ देने के लिए मात्र एक विकलांग रानी जिसको रोशनी चाची कहती थी. लेककन सुल्ताना के आगे वह भी ज्यादा देर तक रोशनी का समर्थन नहीं कर पाई.रोशनी के सामने दुसरा कोई चारा भी नहीं था. फिर भी उसने अपना सपना छोडा नहीं .दिन में अपना व्यवसाय करती थी और रात को पढाई करती थी.अपने कठीण परिश्रम के बालबुते पर उसे आयईएस पद पर स्थापित किया .

उपन्यास के तिसरे भाग में रोशनी के डिस्ट्रिक्ट मँजिस्ट्रेट बनने की कथा का चित्रण किया गया है.रोशनी ने बिघडे हुए प्रशासन को ठिकाणे पर लाने का ठाण लिया इसी कारण उसे अनेक कठीनाईओका सामना करना पढा.उसका हिजडा होने का यहा भी माखोल उडाया गया. बस फर्क इतना था कि उसके उच्च पद के कारण उसके सामने किसी के बोलने की हिम्मत नहीं होती थ. एक अधिकारी के रोशनी डीएम को लेकर कहे गए यह शब्द मुख्यधारा की मानसिकता को प्रदर्शित करते हैं- ''अब ऐसे दिन देखने को रह गए हैं जहां हिजड़े के नीचे काम करना पड़ेगा.''[8] रोशनी इस बात से अनभिज्ञ नहीं थी कि लोग उसकी पीठ पीछे उसके हुनर और काबिलीयत की तारीफ नहीं करते बल्की उसके लिंग को लेकर चर्चा करते हैं. रोशनी ने जल्द ह अपनी अपने अनुभव , ईमानदार और लगन से काम करते हुए अपने जिले के लोगों का दिल और मन जीत लिया था. सामान्य लोग उसके काम और साफ-सुथरी छवि की तारीफ करते थे. रोशनी के थर्ड जेंडर होने से उन्हें कोई शिकायत नहीं थी. रोशनी अपने संघर्षमय सफर के दौरान अपने माता-पिता के विषय में कभी नहीं भूल पाई थी और उनके विषय में जानने के लिए हर तरह प्रयास कर रह थी. अंत में उसकी मित्र नविता जो एक आईपीएस अधिकारी है उसकी सहायता से पता चलता है कि उसका जन्म स्थान दिल्ली है और वहा उसके माता-पिता भी हैं. दिल्ली पुलीस की सहायता से रोशनी को उठाने वाले चोर का भी पता चल जाता है. लेकीन उसे भी कुछ स्पष्ट नहीं पता था कि रोशनी के माता-पिता कौन है। थाने के सब पुराने अभिलेखों को ढूँढने के बाद एक अपहरण हुई बच्ची की रिपोर्ट मिलती है जिसमें उसके माता-पिता का पता लिखा हुआ है.। यह जानकार रोशनी मन-ह -मन प्रार्थना करती रही की वो बच्ची रोशनी हि हो. थाने से पता लेकर रोशनी अन्य पुलिसवालों के साथ ढूंढते हुए रूपा और कलुआ के स्थान पर पहुंचती है. उसे वहाँ जाकर पता चलता है कि उसका बाप इस दुनिया को छोड़कर जा चुका है और रूपा उसके बिछोह के गम में पागल हो गई थी और उसके बारे में किसी को कोई खबर नहीं कि वह कहाँ है? जिंदा है भी या नहीं. और रोशनी उनकी बेटी नहीं है उसने गोद ली हुई बेट थी जिसकी माँ पागल भिखारीन थी. । लेकीन रूपा उसे अपनी जान से भी ज्यादा प्यार और दुलार करती थी. ये सच जानने के बाद रोशनी अंदर से पूर तरह टूट जाती है. न उसे जन्म देनेवाली माँ मिली , न गोद लेने वाली अभिभावकों का प्यार और साथ मिल पाया और न ह पालनेवाली रज्जो मौसी. जिस ररश्ते को ढूँढने वह दिल्ली आई थी वो तो उसे नहीं मिला लेकीन जो मिला उसे जो कुछ सामान, उनकी कोठरी , फोटो, ररक्शा, बर्तन जो भी कोठरी में मिला रोशनी सब को सहेजना चाहती है. केवल सुभद्रा बची है जो उसे उसकी अतीत के बारे में बताती है. रोशनी के व्यक्तित्व और उसके पद को देखकर आस पड़ोस वाले अचंभित थे जिन्होंने रूपा को हिजड़े बच्चे को संरक्षण देने के लिए उसका मजाक उड़ाया था. चिल्लाते हुए सुभद्रा कहती है - ''अरे लोगों देखो कौन आया है। यह है रूपा की मधुवा ... हां....... हां..........मधुवा''[9]

अंत में रोशनी एक किन्नर बच्ची को गोद में लेती है जिसके माता-पिता ने उस बच्चे को गंदे नाले के पास फेंक दिया था और कुत्ते उसे अपना भोजन बना रहे थे. ''सबको चौंका दिया था रोशनी ने अपने निर्णय से... उसका वकील, सिविल जज, सिटी मँजिस्ट्रेट भार्गव, पुलीस सुपरीटेंडेंट कानपुर महानगर त्यागी सब-के-सब अस्पताल में मौजूद थे. सारी कार्यवाही बच्चे के गोद लेने से संबंधित वही पर हुई। महीला डॉक्टर कुलकणी ने बच्चे को, रोशनी के हाथों में देते हुए बधाई दी तो रोशनी बच्चे की ओर देखते हुए बस इतना ही कह सकी स्वागत है आपका मेरे नन्हे दोस्त...''[10]

निष्कर्ष :

अतः उपन्यास हमें शिक्षा देता है कि लिंग आधारीत मानसिकता को त्याग प्रत्येक जगह पर किन्नरों को उचित अवसर देना चाहिए, उनका मान-सन्मान करना चाहिए,साथ हि उनका मार्गदर्शन करना चाहिए तभी वह भी एक सम्मानजनक जीवन यापन कर सकेंगे और अपनी रचनात्मकता, कलात्मकता, सूझबूझ से समाज के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

संदर्भ :

1) हरभजन सिंह मेहरोत्रा - ए जिंदगी तुझे सलाम , पृष्ठ-35
2) हरभजन सिंह मेहरोत्रा - ए जिंदगी तुझे सलाम , पृष्ठ -27
3) हरभजन सिंह मेहरोत्रा - ए जिंदगी तुझे सलाम , पृष्ठ -66
4) हरभजन सिंह मेहरोत्रा - ए जिंदगी तुझे सलाम , पृष्ठ -81
5) हरभजन सिंह मेहरोत्रा - ए जिंदगी तुझे सलाम , पृष्ठ -88
6) हरभजन सिंह मेहरोत्रा - ए जिंदगी तुझे सलाम , पृष्ठ -91-92
7) हरभजन सिंह मेहरोत्रा - ए जिंदगी तुझे सलाम , पृष्ठ - 93
8) हरभजन सिंह मेहरोत्रा - ए जिंदगी तुझे सलाम , पृष्ठ - 149
9) हरभजन सिंह मेहरोत्रा - ए जिंदगी तुझे सलाम , पृष्ठ - 198
10) हरभजन सिंह मेहरोत्रा - ए जिंदगी तुझे सलाम , पृष्ठ - 200

PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar